वंदनागोपाल शर्मा 'शैली'

ई-मेल-vandanagopalsharma77@gmail.com

बड़का भैया

तपती धूप...गर्म सड़क पर ये पथिक...बस चलते ही जा रहे थे...बस चलते ही जा रहे थे... पहला बच्चा काँधे पर...दूसरा गोद में था...तीसरा उँगली थामे चल रहा था... बार-बार पूछता—

"माँ! अब और कितना चलना है?"

"बस, एक कोस और!"

"माँ! कुछ दूर मुझे भी गोद में ले लो न... मुन्ना को कब से गोद में लिए चली जा रही हो!"

"मुन्ना तुझसे छोटा है न बेटा!"

"पर माँ! मैं भी तो छोटा ही हूँ न!"

"हाँ बेटा! लेकिन तुम तो मुन्ना के बड़का भैया हो न!"

"ठीक है माँ! मैं अब पैदल ही चलूंगा...क्योंकि मैं मुन्ना का बड़का भैया हूँ!"

अब वह थकान भी भूल गया था... और उँगली थामे चुपचाप चल रहा था।

अर्चना राय

ई-मेल-:archana.rai1977@gmail.com

पिता

पुष्करनाथ पिछले सात दिन से जगन से मिलने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे और वह था कि हर बार उनसे नजरें बचाकर नौ-दो ग्यारह हो जाता था। पर आज उनका आमना -सामना हो ही गया।

"जगन, अब तो मेरे पैसे वापिस कर दो।"

"अरे!...पुष्कर जी दे दूँगा।" बीड़ी का कस लेते हुए जगन ने कहा।

"बेटी का रिश्ता पक्का हो गया है, अगले हफ्ते उसकी है। मुझे पैसों की सख्त जरूरत है।"

"कहा न, दे दूँगा... मैं कौन-सा कहीं भागा जा रहा हूँ।"

"बेटी की शादी की बात है, मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता।"

"अरे हाँ! पुष्करनाथ जी... जब मैं कह रहा हूँ कि दे दूँगा मतलब दे दूँगा। क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?"

"जगन, तुमने तीन दिन में वापस करने का बोला था, और अब दो महीने होने को आये है। तुम तो पैसा लौटाने का नाम ही नहीं ले रहे हो।"

"अरे! मैंने तो तीन महीने बाद वापस देने कहा था। पुष्कर जी आप बूढ़े हो गए हैं। इसलिए तो आपकी याददाश्त कमजोर हो गयी है। आप चाहो तो मेरे दोस्त कादिर से पूछ सकते हो।"

कादिर गुंडे का नाम सुनकर पुष्करनाथ घबरा गए। एकाएक बेटी का चेहरा उनकी नजरों के सामने आ गया। और वे खुद को संयत करते हुए, "अरे! तुम गुंडे...डाकू और चाहे पुलिस को बुलाओ...अब मैं किसी से नहीं डरने वाला...बात मेरी बेटी की है। तो बस, मुझे मेरे पैसे वापस चाहिए वो भी आज के आज...नहीं तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।"

गरजकर बोलते हुए उनका सर्वांगीण शरीर उत्तेजना से काँप उठा था।

एक पिता की बात सुनकर जगन की बोलती बंद हो गयी और माथे पर पसीने की बूंदें छलक आई।